

पंजाब के ध्रुपद घरानों में से सर्वोत्तम घराना-तलवंडी घराना

डॉ. सौरव कुमार नाहर

असिस्टेंट प्रोफेसर

कला मंच विभाग

बनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

योगेश गर्ग

शोधार्थी,

कला मंच विभाग

बनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

ईमेल: yogeshgarg@gmail.com

सारांश :-

पंजाब के सर्वोत्तम गायकों के सबसे प्राचीन घरानों में से एक है तलवंडी घराना। इस घराने के वंशज एवं शिष्य इस घराने की परंपरा को उस्ताद सूरज खाँ और उस्ताद चांद खाँ के साथ जोड़ते हुए उन्हें मूल (प्रथम) पुरुष मानते हुए इस घराने की स्थापना महाराजा अकबर के काल से ही मानते हैं। यह घराना न केवल अपनी विशेषता गायन शैली के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि इसकी जड़ें आधुनिकता, भक्ती एवं गुरू-शिष्य परंपरा में भी गहरी से जुड़ी हुई हैं। रागों की शुद्धता, लय की दृढ़ता और शब्दों की आधुनिकता इसके गायन की मध्य शैक्षणिक विशेषताएं हैं। आज भी यह घराना अपनी परंपराओं को शुद्ध बनाते हुए संगीत जगत में एक विशेष उदाहरण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द : घराना, स्वर, संगीत, ध्रुपद, गायन, पंजाब, ताल।

हिंदुस्तानी संगीत प्राचीन काल से ही भगवान की पूजा और धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़ा रहा है। हमारी भारतीय परंपरा में संगीत कला के जन्मदाता दो आदि देव माने जाते हैं। ब्रह्मा, सृष्टि के निर्माता, और भगवान शिव, संहारक। जो लोग यह मानते हैं कि संगीत की उत्पत्ति का आधार धार्मिक है, उनका यह भी मत है कि संगीत का जन्म ऊँ "शब्द" से हुआ है। यह ॐ शब्द सजातीय होते हुए भी अ, उ, म इन तीन ध्वनियों से बना है और इसके तीन अक्षर सृजन, पालन और विलय (अंत) के बोधक हैं। संगीतकार संगीत की आध्यात्मिक प्रकृति को समझते हैं। इसमें स्वर, ताल, लय का समावेश है इसलिए इस शब्द को संगीत की उत्पत्ति का कारण माना जाता है। "संगीत - उपासक वर्ग के संगीतकार भक्ति से प्रभावित थे। इन संगीतकारों का

उद्देश्य संगीत के माध्यम से ईश्वर की आराधना करना था, वे संगीत को ईश्वर की उपासना करने और परम आनंद प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन मानते थे। संगीत के साथ-साथ वे अपने इष्ट देव का गुणगान भी करते थे। इन संगीतकारों में स्वामी हरिदास, सूरदास, मीरा, कबीर, सूफी संगीतकार निजामुद्दीन औलिया, मुइनुद्दीन चिश्ती आदि प्रमुख थे। इन संत-संगीतकारों ने कभी भी राजाओं का पक्ष लेने के लिए संगीत का उपयोग नहीं किया। ये संगीतकार देवालयों और आश्रमों में रहते हुए संगीत साधना एवं देवताओं की पूजा करते थे। आज भी यह परंपरा दक्षिण और ब्रज क्षेत्र के मंदिरों में प्रचलित है।⁹

⁹ सचदेवा, रेनू. (1999). *धार्मिक परम्पराएँ एवं हिन्दुस्तानी संगीत*. नई दिल्ली : राधा पब्लिकेशन।

संगीत की घराना प्रणाली का जन्म भी इसी काल में हुआ। राज दरबार के अधीन होने के कारण दरबारी संगीतकार प्रसिद्ध हो गए और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में कई घराने विकसित हुए जैसे-ग़ालियर, दिल्ली, जयपुर, बनारस, आगरा, पटियाला आदि। इन्हीं घरानों से गायन और वादन की कई शैलियाँ निर्मित हुई जो आज भी लोकप्रिय हैं। इसके साथ ही यह भी महत्वपूर्ण है कि मध्य काल में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कई महान कलाकारों का जन्म हुआ जिन्होंने अपने संगीत वाद्ययंत्रों और कड़ी मेहनत के दम पर अपनी कला का लोहा मनवाया।

संगीत के घरानों की बात की जाए तो पंजाब में गायन एवं वादन अपनी मौलिक विशेषताएँ लिए हुए अनेक घराने अस्तित्व में आए, पंजाब में गायन की शैली विभिन्ता के आधार पर कई घराने अस्तित्व में समेटे हुए हैं। पंजाब के अंचल में उद्भूत छः घरानों में से तीन घराने अपना संबंध स्वामी हरिदास जी के शिष्य, ऊ. सूरज खाँ एवं ऊ. चाँद खाँ से जोड़ते हुए इन्हें ही अपना मूल पुरुष घोषित करते हैं। अर्थात् यह सभी घराने मूलतः ध्रुवपद गायकों के घराने थे। कुछ घराने विघटित हो गए हैं और विद्यमान घरानों के वंशधरो ने युग की मांग के अनुसार ख्याल गायकी को अपनाकर ध्रुवपद को प्रायः तिलजलि दे दी है।

संगीत के घरानों में से पंजाब के तलवंडी घराने की बात करते हैं। उस्ताद सूरज खाँ और उस्ताद चांद खाँ भगत गायक श्री स्वामी हरीदास जी के प्रमुख शिष्यों में से एक थे। स्वामी जी से संगीत की शिक्षा ग्रहण करने के बाद आप अपने निवास स्थान गांव खैराबाद (पंजाब) से वापिस आ गए तथा संगीत के प्रचार-प्रसार में लग गए। आपने राएकोट के नजदीक तलवंडी गांव में बस गए। इस स्थान पर निवास करने के कारण ही आप उस्ताद सूरज खाँ

तथा उस्ताद चांद खाँ तलवंडी वाले के नाम से जाने, जाने लगे। तकरीबन ५० दशकों तक इस घराने के कलाकारों की छाप पूरे पंजाब के साथ-साथ सम्पूर्ण भारतवर्ष में रही। इस घराने की परम्परा के कलाकार विभिन्न स्थानों पर रहते हुए आज भी स्वयं को इसी घराने का अंग मानते हैं तथा वह अपने मूल पुरुष उस्ताद सूरज खाँ और चांद खाँ को ही मानते हैं। इस घराने में से केवल विख्यात ध्रुपद गायक ही नहीं बल्कि प्रसिद्ध कीर्तनकार भी हुए हैं।

इस घराने से संबंधित मुख्य कलाकारों में से उस्ताद छज्जू खाँ, उस्ताद मौला बख्श, मौला दाद खाँ, उस्ताद बुगरा खाँ, उस्ताद मुबारक अली खाँ आदि के नाम विशेष तौर पर वर्णनयोग्य हैं।

इसी घराने में से गुरुबाणी कीर्तनकारों में से भाई गुरुमुख सिंह, भाई उत्तम सिंह, भाई लाल सिंह, भाई सुंदर सिंह, भाई मोती, भाई चांद, सतगुरु जगजीत सिंह (भैणी साहिब) आदि नाम विशेष हैं।

इसके अलावा गंगा सिंह आर्या, परमानंद, पंडित दलीप चंद बेदी आदि नाम भी शीर्ष परम्परा के अन्तर्गत आते हैं।

इस घराने की संक्षिप्त जानकारी के लिये इसकी शिष्य परम्परा को मुख्य तीन रूप में विभाजित किया जा सकता है जो निम्नानुसार हैं :-

१. वंश परम्परा के कलाकार
२. शिष्य परम्परा के गायक कलाकार
३. गुरुबाणी कीर्तन के कलाकार

इस घराने की गायकी की विशेषताओं को यदि देखा जाए तो इस घराने में आवाज का खुल्लापन होता है। गायकी के लिये जोरदार और बुलंद आवाज का प्रयोग किया जाता है। ध्रुपद शैली से प्रभावित होने के कारण गायन के आरम्भ में एक लम्बा अलाप (नोम-तोम) का आधार बनाया जाता है। गुरुबाणी कीर्तनकार इसे मंगलाचरण के नाम से

प्रभु स्मरण के शब्दों का उच्चारण करके कीर्तन की शुरुआत करते हैं। इस घराने में पखावज अंग की तालों का प्रयोग अधिक किया जाता है। इसमें ताल वाद्यों की और से साथ की संगति गायन की धुन अनुसार की जाती है जो कि मुख्य रूप से इसी घराने में देखने को मिलती है। राग की शुद्धता, राग विस्तार आर तान क्रिया में विशेष ध्यान और जोर दिया जाता है। ऐसे समय में इस घराने का बदलता ख्याल गायन के घराने श्यामचौरासी में से देखने को मिलता है। परन्तु यह घराना भी अपने अस्तित्व को बचाने का यत्न कर रहा है।

निष्कर्ष :-

तबवंडी घराना ध्रुपद का विशेष घराना है जो कि लम्बे समय तक पंजाब के संगीत का प्रतिनिधित्व करता रहा है, ऐसे समय में इसके अस्तित्व का स्वरूप देखने पर भी नजर नहीं आता है जो कि बहुत ही गम्भीरता और अफसोस का विषय है। आज भी यह घराना अपनी शैली, गुरू-शिष्य परंपरा और संगीत साधना के माध्यम से भारतीय संगीत को सम्मद्ध कर रहा है। ऐसे समय में जब यह शैलीयां लुप्त होती जा रही हैं, तबवंडी घराना अपनी पहचान को बचाने का यत्न कर रहा है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूचि

- गुप्ता, चित्रा. (१९६२). संगीत मे ताल वाद्य की उपयोगिता. नई दिल्ली : राधा पब्लिकेशन्स।
- गर्ग, लक्ष्मी नारायण. (१९६८). निबंध संगीत. उत्तर प्रदेश : संगीत कार्यालय हाथरस।
- आहीबल, (१९५६). संगीत पारिआत. उत्तर प्रदेश : संगीत कार्यालय हाथरस।
- शर्मा, अमिता (२०००). शास्त्रीय संगीत का विकास. दिल्ली : ईस्टर बुक लिंकरस।
- बृहस्पति, आचार्य. (२००१). संगीत चिंतामणि. उत्तरप्रदेश : संगीत कार्यालय।
- सचदेवा, रेनू. (१९६६). धार्मिक परम्पराएँ एवं हिन्दुस्तानी संगीत. नई दिल्ली : राधा पब्लिकेशन।